कांट (Kant)

कांट की लिखनी है।

* संश्लेषात्मक प्रागनुभविक निर्णय की संभावना (Possibility of synthetic a priori judgement)
* दिक् एवं काल (space & time)
* पदार्थ (Categories)
* तर्कबुद्धि प्रत्यय (Ideas of Reason)
* विप्रतिषेध (Antinomies)
* परमात्मा के अस्तित्व के प्रमाणों की मीमांसा (Critique of Proofs for the existence of God)

↓

↳ स्पष्टीकरण कांट ने ईश्वर के अस्तित्व सिद्धि के तर्कों का खंडन किया है ईश्वर का नहीं। कांट नैतिक आधार पर ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं।

1* जर्मन दार्शनिक

Religion में प्रश्न मैटाफिजिक्स हो वहाँ कांट के बारे में सोचो

Scanned with CamScanner

	निर्णय	नवीनता	अनिवार्यता	सार्वभौमता	कौन मानता है
1	संश्लेषणात्मक अनु.	✓	×	×	अनुभववादी
2	विश्लेषणात्मक अनु.	—	संभव नहीं		—
3	विश्लेषणात्मक प्राग.	×	✓	✓	बुद्धिवादी
4	संश्लेषणात्मक प्राग.	✓	✓	✓	कांट
		कांट के अनुसार वही ज्ञान, ज्ञान है जिसमें नवीनता के साथ अनिवार्यता - सार्व. भी हो। इस रूप में वे संश्लेष. प्राग. निर्णय संभाव्यता स्वीकार।			

कांट के अनुसार ज्ञान संश्लेषणात्मक प्रागनुभाविक निर्णय की समष्टि है। ऐसा ज्ञान गणित और भौतिकी में संभव है।

(ख) बाद में तार्किक भाववादी केवल दो प्रकार के कथनों को अर्थपूर्ण मानते हैं:—

① & ③ (संश्लेषणात्मक आनुभाविक एवं विश्लेषणात्मक प्रागनुभाविक)

और वे ④ (संश्लेषणात्मक प्रागनुभाविक) का खंडन करते हैं।

(3)

ज्ञान का स्वरूप

↓

कांट

↓

निर्णय (Judgement) - उद्देश्य एवं विधेय से युक्त कथन

↓

वर्गीकरण

- (सत्य/असत्य) प्रामाणिकता का निर्धारण
  - ✓ ← अनुभव → ×
  - आनुभविक निर्णय (Aposteriori)
  - प्रागनुभविक निर्णय (Apriori)
- उद्देश्य-विधेय सम्बन्ध (Subject-Predicate)
  - संश्लेषणात्मक (Synthetic): × S ⟶ P
  - विश्लेषणात्मक (Analytical): ✓ S ⟶ P

1. नवीनता ✓, अनिवार्यता ✗ - सार्वभौमता ✗ (आनुभविक, संश्लेषणात्मक)
2. ✗ (आनुभविक, विश्लेषणात्मक)
3. नवीनता ✓, अनिवार्यता ✓ - सार्वभौमता ✓ (प्रागनुभविक, संश्लेषणात्मक)
4. ✓ नवीनता ✗, अनिवार्यता ✓ - सार्वभौमता ✓ (प्रागनुभविक, विश्लेषणात्मक)

Scanned with CamScanner

आनुभविक निर्णय

* ऐसा निर्णय है जिसकी प्रमाणिकता अनुभव पर निर्भर करती है।
* अनिवार्यता एवं सार्वभौमता नहीं होती।
* यदि आनुभविक निर्णय सत्य है, तो भी सत्य होना इसका अनिवार्य गुण नहीं है।
* इसमें नवीनता होती है।
* सभी आनुभविक निर्णय संश्लेषणात्मक निर्णय होते हैं परंतु सभी संश्लेषणात्मक निर्णय आनुभविक निर्णय नहीं होते।

Ex- गुलाब लाल है, कोई सफेद है → True / false
etc.
S → P

प्रागनुभविक निर्णय

* ऐसे निर्णय जिनकी प्रमाणिकता अनुभव से निर्धारित नहीं होती।
* ऐसे निर्णयों मे अनिवार्यता एवं सार्वभौमता होती हैं।
* नवीनता हो भी सकती है और नहीं भी।
* सभी विश्लेषणात्मक निर्णय प्रागनुभविक निर्णय होते हैं परंतु सभी प्रागनुभविक निर्णय विश्लेषणात्मक निर्णय नहीं होते।
* जो कथन प्रागनुभविक एवं विश्लेषणात्मक होगा उसमें नवीनता नहीं होगी परंतु जो प्रागनुभविक संश्लेषणात्मक होगा उसमें नवीनता हो सकती है।

Ex:- लाल गुलाब रंगीन है, सभी कुँवारे (S) अविवाहित (P) व्यस्क मनुष्य हैं। 5+7=12

संश्लेषणात्मक निर्णय

* ऐसे निर्णय जिनमें विधेय-उद्देश्य में समाहित नहीं होते हैं।
* विधेय उद्देश्य के बारे में नवीन जानकारी प्रदान करता है।
* विधेय उद्देश्य के बारे में कुछ नया जोड़ता है।
* सभी आनुभविक निर्णय संश्लेषणात्मक होते हैं परंतु सभी संश्लेषणात्मक निर्णय आनुभविक नहीं होते। कुछ संश्लेषणात्मक निर्णय प्रागनुभविक होते हैं।
* जब संश्लेषणात्मक निर्णय आनुभविक होगा तो वहाँ अनिवार्यता और सार्वभौमता नहीं होगी तथा प्रागनुभविक होने पर अनिवार्यता और सार्वभौमता होगी।

विश्लेषणात्मक निर्णय

* ऐसे निर्णय जिनमे विधेय उद्देश्य मे ही समाहित होता है।
* अनिवार्यता एवं सार्वभौमता होती है नवीनता नहीं होती।
* उद्देश्य और विधेय मे तादात्म्य संबंध होता है।
* विश्लेषणात्मक निर्णय का व्याघात (उपेक्षा असत्य) करने पर निषेध की स्थिति उत्पन्न होती है।

Ex- लाल गुलाब रंगीन है, सभी कुँवारे अविवाहित हैं।

Scanned with CamScanner

संश्लेषणात्मक प्रागनुभाविक निर्णय की संभाव्यता (SAJ)

(Possibility of Synthetic Apriori Judgement)

भूमिका – Kant – Critique of Pure Reason – मुख्य उद्देश्य ↓ ज्ञान की संभावना की विवेचना करना है।

↓

ज्ञान की कसौटी – अनिवार्यता, सार्वभौमता, नवीनता

↓

पूर्ववर्ती विचारधाराएँ
- → बुद्धिवाद → अनिवार्यता एवं सार्वभौमता, नवीनता नहीं
- → अनुभववाद → नवीनता → अनिवार्यता एवं सार्वभौमता नहीं।

↓

समन्वय → कांट मतानुसार ज्ञान संश्लेषणात्मक प्रागनुभाविक निर्णयों की समष्टि है अर्थात् ज्ञान में नवीनता के साथ-साथ अनिवार्यता और सार्वभौमता भी होती है।

↓

SAJ (ऐसा निर्णय जिसमें)
- → विधेय उद्देश्य में सम्मिलित नहीं (संश्लेषणात्मक)
- → जिसकी प्रमाणिकता अनुभव पर निर्भर नहीं (प्रागनुभाविक)

उल्लेखनीय तथ्य → सभी संश्लेषणात्मक निर्णय प्रागनुभाविक नहीं है परंतु कुछ संश्लेषणात्मक निर्णय आनुभाविक न होकर प्रागनुभाविक होते हैं।

↓

कहाँ संभव
- → गणित
- → भौतिक विज्ञान

↓

गणित में कैसे ? – कांट एक उदाहरण के माध्यम से इसे स्पष्ट करते हैं
7+5=12, यहाँ 7+5 – उद्देश्य है, 12 – विधेय है।
यहाँ विधेय "12" उद्देश्य "7+5" में विद्यमान नहीं है, यहाँ "7+5" केवल दो अंको के योग को बताता उनके योगफल को नहीं इस रूप में यह कथन संश्लेषणात्मक है। पुनः इसकी प्रमाणिकता अनुभव पर आधारित नहीं है मतः यह कथन प्रागनुभाविक है।

भौतिकी विज्ञान – भौतिकी में SAJ संभव है वह इसकी व्याख्या बुद्धि विकल्पों में निहित कारण - कार्य सिद्धांत के आधार पर करते हैं।
उदा. स्वरूप – घटनाये कारण कार्य नियम से संचालित होती है यह कथन संश्लेषणात्मक है क्योंकि कारण कार्य नियम घटनाओं में विद्यमान नहीं होता। पुनः कारणता सिद्धांत

बुद्धि का एक विकल्प है इस रूप मे यह आनुभाविक न होकर प्रागनुभाविक है। परिणामस्वरूप इसमें अनिवार्यता एवं सार्वभौमता है।

उल्लेखनीय है कि ह्यूम ने कारण कार्य सम्बंध को आनुभाविक मानकर कारण कार्य सम्बंध के मध्य के अनिवार्य एवं सार्वभौम सबंध की अवधारणा का ह्यूम खंडन करते हैं। ऐसा करके वे विज्ञान के क्षेत्र मे संशयवाद की स्थापना कर देते हैं। कांट कारणता सिद्धांत को बुद्धि का एक विकल्प मानकर उसे प्रागनुभाविक रूप मे स्वीकार करते हैं और इस आधार पर भौतिकी मे नवीनता के साथ साथ अनिवार्यता और सार्वभौमता की भी व्याख्या करते हैं।

तत्वमीमांसा- अतीन्द्रीय तत्वमीमांसा संभव नहीं है।

ईश्वर आत्मा आदि शुद्ध बुद्धि के विषय नहीं है। (यह वास्तव में आस्था और विश्वास का विषय है तर्क के विषय नहीं है)

Kant

शुद्ध बुद्धि ⟹ ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति

3 पक्ष

1. Sensibility (संवेदन शक्ति)

ग्रहण → ज्ञान की सामग्री
संवेदना
↓
अव्यवस्थित

S & T – ज्ञान प्राप्त करने की तार्किक प्रागपेक्षा है।

- दो प्रागनुभविक आकार (S,T)
- अनुभव से S,T से प्राप्ति नहीं बल्कि अनुभव की प्राप्ति S,T के माध्यम से होती है। इनके माध्यम से ही अनुभव से प्राप्त सामग्री बुद्धि विकल्पों तक पहुँचती है। ये ज्ञान प्राप्ति के द्वार है।
- देश, काल मानसिक चश्मे समान हैं।

2. Understanding (समझ शक्ति / बुद्धि)

ज्ञान का निर्माण → सामग्री, आकार (12)

प्रकृति का निर्माण

- जिसकी संवेदना हमें S,T माध्यम प्राप्त हो।
- ज्ञात एवं ज्ञेय हैं
- कांट ने Phemona को मानकर ह्यूम के संशयवाद से विज्ञान की रक्षा की है और न्यूमेना मानकर विज्ञान के प्रहार से धर्म की रक्षा की है।

Phenomena

ज्ञान की सामग्री – अनुभव से (संवेदना)

इस प्रकार कांट ने विज्ञान और धर्म में सामंजस्य स्थापित किया है।
उन्होंने दृश्य जगत के संदर्भ में विज्ञान को महत्ता दी है और अदृश्य जगत के संदर्भ में धर्म को।

Numenal world – तर्क का विषय न होकर आस्था और विश्वास का विषय है। न्यूमेना फेनोमेना का आधार है।

Naumena

- जिसकी संवेदना देश काल के माध्यम से प्राप्त नहीं होती हो। अर्थात् न्यूमेना देश और काल से परे है।
- अज्ञात एवं अज्ञेय है।
- देश और काल से परे वस्तु का अपना वास्तविक स्वरूप (Things in itself) (वस्तु अपने आप में)

S,T अवधारणा कांट को अंततः अज्ञेयवाद की ओर ले जाती है। ↓ परमार्थ सत् → अज्ञात / अज्ञेय।

- *12 बुद्धि विकल्प (categories) / पदार्थ / वर्गनाएं
- *प्रागनुभविक आकार
- *साँचो के समान
- *अव्यवस्थित संवेदनाएं इनके माध्यम से व्यवस्थित होती है, ज्ञान के रूप में निर्मित होती है।
- *संवेदनाओं के बिना बुद्धि विकल्प खाली है और बुद्धि विकल्पों के बिना संवेदनाएं अंधी है।

(Concepts without percepts are empty & percepts without concepts are blind)

बुद्धि प्रकृति का निर्माण उस सामग्री से करती है जिसे वह स्वयं उत्पन्न नहीं करती (Understanding makes nature)

प्रागपेक्षा – पूर्व अपेक्षा

Phenomenal world – प्रपंचमय

T – Time S – Space C.T – causal theory

*अज्ञेयवाद – आशय इतना है कि परमार्थ सत् ज्ञान की परिधि से बाहर है। अज्ञेय कहने का मतलब अस्तित्व का खंडन करना नहीं है।

* **Copernican Revolution** – कांट के पहले यह माना जाता था कि जैसी वस्तु वैसा ज्ञान अर्थात् प्रकृति बुद्धि का निर्माण करती है। कांट ने इसको परिवर्तित करते हुए कहा कि जिस प्रकार के ज्ञान का निर्माण समक्ष शक्ति के स्तर पर होता है उस के अनुरूप वस्तुएँ होती हैं अर्थात् ज्ञेय-ज्ञाता के अनुरूप होता है।

3. **Reason (प्रज्ञाशक्ति)** – समाष्टिगत रूप प्रदान

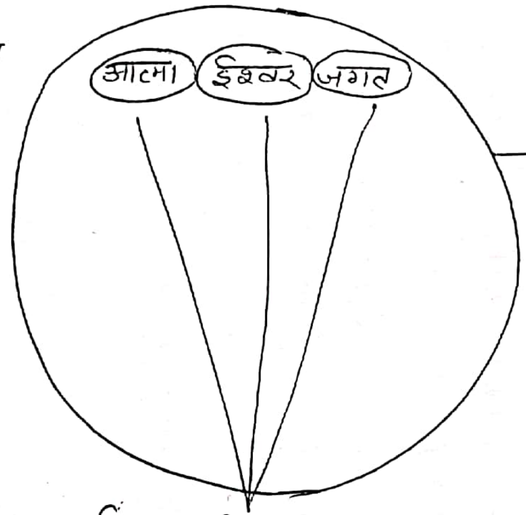

प्रज्ञा के तीन प्रत्यय हैं–
1) ईश्वर का प्रत्यय
2) आत्मा का प्रत्यय
3) जगत का प्रत्यय

ये ज्ञान के नियामक तत्व हैं, निर्णायक तत्व नहीं हैं। इनसे जोड़कर ज्ञान को समष्टिगत रूप प्रदान किया जाता है।

इनके संदर्भ में आदर्श ज्ञान की प्राप्ति की जाती है। वास्तविक ज्ञान प्राप्ति का दावा नहीं किया जा सकता। जब बुद्धि विकल्पों का प्रयोग अतीन्द्रीय सत्ताओं पर किया जाता है तो फिर अतीन्द्रीय भ्रम की स्थिति होती है। ऐसे भ्रम में पक्ष व विपक्ष में तुल्य बल (समान बल) की युक्तियाँ दी जा सकती हैं। पक्ष और विपक्ष एक दूसरे को हराते नहीं हैं। यहाँ इसका संबंध विज्ञान एवं धर्म के संदर्भ से है। जैसे- धर्म तर्क देकर ईश्वर की सिद्धी करता है। विज्ञान तर्क देकर उसका खंडन करता है। यहाँ दोनों में से किसी भी पक्ष को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

कांट ने यहाँ धर्म और विज्ञान को समन्वित करने का प्रयास किया है।

Antinomies – जब बुद्धि विकल्पों का प्रयोग अतीन्द्रिय सत्ताओं (S, T से परे) (ईश्वर, आत्मा, जगत के मूल तत्व) के ऊपर करते हैं तो अतीन्द्रिय भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। ये तीन प्रकार के होते हैं। जगत संबंधी भ्रम को Antinomies कहा जाता है।

ontology
↓
तत्व के बारे में बात होती है
Jeneology
↓
परिणाम सापेक्ष

जब यदि ~~काम पर~~ आधारित न हो तो वह नियम पर आधारित हो
↓
Deontology

(A)

आलोचनात्मक दर्शन या समीक्षात्मक दर्शन (Critical Phylosophy)।

समन्वयवाद

भूमिका - कांट स्वयं अपने दर्शन को आलोचनात्मक दर्शन कहते हैं।

आशय - किसी दार्शनिक मत, सिद्धांत, पुस्तक आदि का खंडन नहीं है।

वास्तविक आशय - ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान के अनिवार्य तत्व, ज्ञान की सीमा, ज्ञान की प्रमाणिकता, व्यक्ति के ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता इत्यादि का परीक्षण एवं समीक्षा करना है।

समीक्षावाद क्यों? * कांट के पूर्ववर्ती सिद्धांतों बुद्धिवाद एवं अनुभववाद में ज्ञान के स्रोत, ज्ञान की सीमा इत्यादि का परीक्षण किये बिना ही सीधे-2 ज्ञान संबंधी मत प्रस्तुत किया गया है।

बुद्धिवाद सभी ज्ञान को जन्मजात मानता है क्या सभी ज्ञान बुद्धि में विद्यमान है

* बुद्धिवाद की चरम परिणति जहाँ हठवाद (Dogmatism) में होती है। वहीं अनुभववाद संशयवाद में परिणति हो जाता है। ये दोनो मत एकांगी है।

कांट अपना मत प्रस्तुत करने से पूर्व इन सारी बातों की समीक्षा करते हैं। कांट इस क्रम में अपने पूर्ववर्ती मतों की भी समीक्षा करते हैं यह समीक्षा अंत उनके दर्शन में समन्वयवाद का रूप ले लेती है।

समन्वय के 5 प्रमुख बिंदु -

1. ज्ञान का स्रोत < बुद्धिवाद - बुद्धि / अनुभववाद - अनुभव > कांट < अनुभव - ज्ञान की सामग्री / बुद्धि - ज्ञान का आकार

★ "कांट मतानुसार संवेदनाओं के बिना बुद्धि विकल्प खाली है और बुद्धि विकल्पों के बिना संवेदनाएँ अंधी हैं।"

2. ज्ञान का लक्षण < बुद्धिवाद - अनिवार्यता, सार्वभौमता / अनुभववाद - नवीनता > कांट - ज्ञान में { अनिवार्यता, सार्वभौमता, नवीनता

कांट मतानुसार ज्ञान संश्लेषणात्मक (नवीनता) प्रागनुभविक (अनिवार्यता, सार्वभौमता) निर्णयों की समष्टि है।

Scanned with CamScanner

3) पद्धति
- बुद्धिवाद – निगमन
- अनुभववाद – आगमन

कांट – आगमनात्मक और निगमनात्मक
ज्ञान की पद्धति कुछ बाहर से और कुछ अंदर से
कांट की तुलना मधुमक्खी से की जाती है

4) सक्रियता एवं निष्क्रीयता
- बुद्धिवाद – ज्ञान प्राप्ति में बुद्धि सदैव सक्रिय
- अनुभववाद – सरल प्रत्ययों की प्राप्ति के समय बुद्धि निष्क्रीय.

कांट-मतानुसार ज्ञान प्राप्ति के क्रम में बुद्धि को केवल इस अर्थ में निष्क्रीय माना जा सकता है कि वह ज्ञान संबंधी सामग्री अपने भीतर से उत्पन्न नहीं करती। ज्ञान की सामग्री बाहर से आती है। बुद्धि के 12 प्रागनुभविक आकारों (Categories) से जोड़कर ज्ञान का निर्माण किया जाता है।

5) क्षमता
- बुद्धिवाद – बुद्धि में ज्ञान प्राप्त करने की असीम क्षमता है। B/C सारा ज्ञान जन्म से ही मस्तिष्क में विद्यमान है।
- अनुभववाद – जन्म के समय मस्तिष्क कोरी पटिया के समान होता है। अनुभव से ज्ञान अर्जित होता है। (अनुभव से प्राप्त ज्ञान पर संशय किया जा सकता है.

कांट – जिसकी संवेदना हमें देश और काल के माध्यम से प्राप्त होती है। उसका ज्ञान प्राप्त होता है। जबकि जो देश और काल से परे है वह अज्ञात एवं अज्ञेय है। इस प्रकार कांट Phenomena को मानकर ह्यूम के संशयवाद से विज्ञान की रक्षा करते हैं जबकि Neomena को (पारमार्थ सत्) मानकर (देशकाल से परे सत्ता) विज्ञान से धर्म की रक्षा करते हैं।

Que. कांट विज्ञान और धर्म का समन्वय कैसे करते हैं?
Que. कांट का समीक्षावाद अंतत: समन्वय का रूप ले लेता है?
Que.